18.	Bhopal Express	25 September 2009

सीएमएस उत्सव में होगा 33 अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों का प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित पर्यावरण पर आधारित उत्सव सीएमएस वातावरण में इस बार विजेता फिल्मों का चयन फिल्मकार जानू बरुआ की अध्यक्षता में सात सदस्ईय निर्णायक मंडल करेगा।

फिल्मों के चयन के दो चरण पूरे हो चुके हैं और अंतिम तथा तीसरे चरण में सात सदस्ईय ज्यूरी अपना निर्णय देगी और सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ संपादन, कम बजट वाली सर्वश्रेष्ठ फिल्म आदि का चुनाव करेगी। सीएमएस वातावरण उत्सव की निदेशक अलका तोमर ने कहा कि पिछले उत्सव के मुकाबले फिल्मों की प्रविष्टियों की संख्या बढ़ी है, जिससे लगता है कि फिल्मकार इसे गंभीरता से ले रहे हैं। ज्यूरी के अध्यक्ष जानेमाने असमिया फिल्मकार और फिल्म मैंने गांधी को नहीं मारा के पटकथा लेखक जानू बरुआ हैं। इसके अन्य सदस्यों में जानेमाने फिल्म आलोचक खालिद मोहम्मद, ओशियान की संस्थापक निदेशक अरुणा वासुदेव, भारतीय विद्यापीठ पर्यावरण संस्थान के निदेशक डॉ. इरेच भरूचा, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और पर्यावरण विशेषज्ञ इंद्रजीत सिंह, त्रिपुरा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के चेयरमैन प्रोफेसर मिहिर देव और जल संरक्षण से जुड़े राजेंद्र सिंह हैं। इस बार 27-31 अक्तूबर 2009 तक आयोजित होने वाले इस पांच दिवसीय उत्सव में पर्यावरण पर आधारित 73 भारतीय और 33 अंतरराष्ट्रीय फिल्मों के प्रदर्शन के अलावा, सेमिनारों, कार्यशालाओं और समूह चर्चा का आयोजन भी किया जाएगा। सीएमएस वातावरण के लिए 366 प्रविष्टियां आई हैं। इनमें भारत के 20 अलग अलग राज्यों से 276 फिल्में हैं। 90 फिल्में अंतरराष्ट्रीय हैं।

सात सदस्यों वाली ज्यूरी करेगी चयन

चयनित फिल्मों को प्रदर्शित किया जाएगा और 50 हजार रुपए से लेकर डेढ़ लाख रुपए की राशि के पुरस्कार दिए जाएंगे। फिल्मों को कई श्रेणियों में बांटा गया है। जिनमें एनिमेशन, इको टूरिज्म, पर्यावरण संरक्षण, जीवन के लिए वन, प्रकृति, जीवनशैली, विद्यार्थियों के लिए फिल्म, वन्यजीव संरक्षण, सभी के लिए जल आदि हैं। आने वाली कुछ प्रविष्टियों पर नजर डालें तो इशानी के दत्ता की फिल्म द लैंड ऑफ वेनिशिंग लेक्स में दो अरब वर्ष पुराने जलाशयों की स्थिति दर्शाई गई है। इसी तरह उमेश अग्रवाल की अंडरग्राउंड इंफर्नो में कोयले की खदानों की आग पर रोशनी डाली गई है। इसमें दुनिया भर में आग से निपटने के लिए जर्मन वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद एक नई तकनीक के इस्तेमाल का भी सुझाव दिया गया है। यातायात से होने वाले प्रदूषण पर ध्यान खींचने वाला वृत्तचित्र जस्ट व्हील्स भी इसमें शामिल है।